जल सहेलियों की अनोखी दास्तान

गांव की महिलाओं ने की पहल

ये हैं शारदा... विजयपुरा की रहने वाली हैं..ये खुश हैं कि इन्होंने परमार्थ के साथ मिलकर अपने इलाके में पानी की समस्या को कम करने में बड़ी भूमिका निभाई है। बरुआ नाले के पानी को रोकने के लिए इन्होंने काफी मेहनत की..अब नतीजा सामने है..पशु पक्षी के लिए पीने का पानी है और लोग इसमें नहाते भी हैं.. शारदा बताती हैं कि शुरुआत में घरवालों ने मेरे घर से बाहर निकलने को लेकर विरोध किया। लेकिन मुझे विश्वास था कि परमार्थ ने जो रास्ता दिखाया है हमे, उससे हमारी जिंदगी में बड़ा बदलाव आने वाला है। हुआ भी यही। जब स्थितियां बदलने लगीं तो लोगों ने साथ देना शुरू कर दिया। घरवाले भी अब खुश हैं कि मैंने कोई अच्छा काम किया है।

महिलाओं ने मिलकर बनाया बांध

शारदा की तरह कुसुम ने भी बरुआ नाले को पानीदार बनाने के लिए जीतोड़ मेहनत की है..ये खुश हैं कि उनसभी की मेहनत की वजह से आज इलाके में सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध है। लोगों की दिक्कतों के समाधान करने की कुसुम की खुशी उनके चेहरे पर स्थायी भाव ले चुकी है। शारदा कहती हैं, हमारे गांव में पानी की बड़ी समस्या थी। इसी दौरान हम और गांव की कुछ महिलाएं परमार्थ संस्था के संपर्क में आईं। उन्होंने हमें जो रास्ते बताए, हम उनपर काम करने लगे और अब हमारे गांव में पानी की समस्या बहुत हद तक कम हो गई है। हमने पानी को रोकने के लिए बोरियों में मिट्टी भर भर के उसकी सिलाई की और उससे बांध बना दिया। अब हमारे गांव में जानवरों और पक्षियों के लिए पीने का पानी उपलब्ध हो गया है। सिंचाई के लिए भी पानी है। हमें लगता नहीं था कि ये समस्या कभी खत्म होगी। लेकिन परमार्थ ने हम सभी को जो रास्ता दिखाया उसपर चलकर आज हम पानी के मामले में आत्मनिर्भर होते जा रहे हैं।

चार महीने में कुंआ खोद डाला

इमरती की कहानी तो गजब ही है। इन्होंने परमार्थ की प्रेरणा और सहयोग से अपने इलाके में कुंआ खोदने की ठान ली... चार महीने के संघर्ष के बाद ये अपने मकसद में तो कामयाब हो गईं... लेकिन इन चार महीनों में उन्होंने इलाके के लोगों का उपहास सहा... धमकियां झेलीं... लेकिन अपने इरादे से डिगी नहीं... आज इनके चेहरे पर अपने काम में कामयाब होने का संतोष और आत्मविश्वास कोई भी पढ़ सकता है। इमरती बताती हैं कि मेरे गांव में पानी की हालत ये थी कि कीचड़ वाले पानी को हम बर्तन में निथारकर और छानकर उपयोग में लाया करते थे। हमने इसी को अपनी नियति मान ली थी लेकिन परमार्थ के लोगों के संपर्क में आई तो रास्ता दिखने लगा। उन्होंने हमें सीमेंट और दूसरे साधन उपलब्ध कराए। खुद ही मेहनत के लिए प्रेरित किया। हम गांव की महिलाओं ने कुंआ खोदने के लिए खुद ही कुदाल उठाई और कुंआ खोदना शुरू किया तो कुछ लोगों को ये बात बुरी लगने लगी। उनकी ओर से धमकियां आने लगीं। हमारे लोगों को पीटा भी गया लेकिन गांव की महिलाओं ने ठान लिया कि अब हम रुकेंगे नहीं। हम चार-पांच महिलाएं मिलकर लगभग चार महीने तक कुंआ खोदती रहीं फिर बाद में गांव के पुरुषों ने भी साथ दिया और हम कुंआ खोदने में कामयाब हो गए। इस दौरान लोगों ने हमारी खूब हंसी भी उड़ाई गई। लेकिन हमने उसपर ध्यान नहीं दिया। हमने जो ठाना था उसे पूरा किया और अब हमें पीने के पानी के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हैं।

एक कामयाबी के बाद अगला संघर्ष

इमरती और उनके साथ की महिलाओं ने गांव में कुंआ खोदने के बाद भी पानी के लिए संघर्ष को रुकने नहीं दिया। उन्होंने परमार्थ के सहयोग से इलाके में एक चेकडैम का भी निर्माण किया ताकि इलाके में पानी की समस्या न रहे। इमरती कहती हैं कि पानी के संघर्ष करते हुए हमें केवल धमकियां नहीं मिली। हमारी पिटाई भी हुई। लेकिन शाम में हम पिटते और अगली ही सुबह हम कुंआ खोदने निकल जाते। एक जिद सी आ गई थी कि हमें ये हालात बदलने हैं। हमे परमार्थ की ओर से पूरा सहयोग और प्रेरणा मिल रही थी, इसलिए हम सारी दिक्कतों को पीछे छोड़ते हुए कामयाब रहे। इमरती कहती हैं कि हम और हमारी सहेलियों ने अपने पड़ोस के गांव में भी चेकडैम बनाने में मदद की। अपने गांव के अलावा दो और चेकडैम बनवाने का गर्व भारती के चेहरे पर साफ दिखता है।

हमारी मेहनत और उनकी प्रेरणा ने बदल दी जिंदगी

तालबेहट के बदाउनी की आदिवासी समुदाय की सुनीता की तो जिंदगी ही बदल गई..घर में सीमित रहने वाली सुनीता ने जल सहेली के रूप में अपने पास पड़ोस की महिलाओं के साथ मिलकर अपने इलाके के पास के नहर से अपने गांव तक पानी के लाने के लिए पहाड़ों की खुदाई की। इलाके के तालाब गर्मियों में सूख जाते थे। उनमें पानी ही नहीं रहता था। लेकिन इन्होंने जब नहर से रास्ता बनाकर उसमें पानी के आने का इंतजाम कर दिया तो यह समस्या जाती रही। महिलाओं की इस कोशिश से इलाके का जलस्तर काफी सुधरा है। हैंड पंपों से भी पानी आने लगा। पहले गर्मियों में सभी हैंड पंप सूख जाते थे। लेकिन परमार्थ के लोगों के साथ मिलकर इलाके की महिलाओं ने ऐतिहासिक काम कर डाला। पत्थर का सीना चीरकर इन्होंने अपने लिए पानी का इंतजाम किया है। वे इसका पूरा श्रेय परमार्थ और उनके लोगों की प्रेरणा को देना चाहती हैं। उन्होंने बताया कि हमारी मेहनत और उनके मार्गदर्शन ने आज इस इलाके की तस्वीर बदल दी।

सामाजिक रुढ़ियों से लड़ना भी सिखाया

कलोथरा की मीरा की कहानी तो और भी दिलचस्प है..मीरा और उनकी सहेलियों ने परमार्थ से ट्रेनिंग और प्रेरणा पाकर न केवल अपने इलाके में पानी की समस्या से निजात पाने में कामयाबी पाई बल्कि सामाजिक रुढ़ियों से लड़कर महिलाओं के लिए आजादी हासिल की। उनके गांव में महिलाओं को चप्पल पहनकर बाहर निकलने की आजादी नहीं थी। महिलाओं का पैर में चप्पल डालकर घर से निकलना बहुत बड़ा सामाजिक अपराध माना जाता था। काम पर निकलने वाली महिलाएं हाथ में चप्पल लेकर गांव से बाहर निकलती थी और गांव के बाहर जाने पर ही वे अपने पैरों में चप्पल डाल पाती थीं। मीरा कहती हैं कि बच्चे वाली महिलाओं के लिए यह समस्या और बड़ी थी कि वे चप्पल संभाले कि अपने बच्चे को। मीरा और उनके साथ की जल सहेलियों ने इसके खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ी। उत्साह से भरी मीरा कहती हैं, अब हम औरतें अपने घर से चप्पल पहनकर बाहर निकलती हैं।

हौसले से मिले हुनर ने बनाया आत्मनिर्भर

कलोथरा गाँव की ही गणेशी से बात करते हुए साफ हो जाता है कि परमार्थ से प्रेरणा पाकर बुंदेलखंड की जल सहेलियों ने जो आत्मविश्वास हासिल किया उससे उनकी आधी समस्याएं समाप्त हो गई। गणेशी कहती हैं कि हमारें गांव का हैंडपंप जब खराब हो जाता था तो महीनों उसकी मरम्मत नहीं हो पाती थी। हम वैसे ही पानी की किल्लत से जूझते हुए बड़े हुए हैं। हैंडपंप रहते हुए पानी की समस्या झेलना एक अलग तरह का अभिशाप था। लेकिन परमार्थ ने हम जल सहेलियों को हौसला दिया, हिम्मत दी और हुनर भी। अब हम जल सहेलियों ने खुद ही हैंड पंप की मरम्मत करना सीख लिया है। इस आत्मनिर्भरता ने हमारी जिंदगी बदल दी है। हम जल सहेलियां एक दूसरे का हाथ थामें बड़ी से बड़ी समस्याओं का मुकाबला करने को तैयार रहती हैं।

रुकी छोटी उम्र में लड़कियों की शादी

ललितपुर के तालबेहट इलाके के कलोथरा गांव की जल सहेली रामवती की कहानी साफ तौर पर बताती है कि परमार्थ ने बुंदेलखंड क्षेत्र में न केवल पानी की समस्या के समाधान के प्रयास किए बल्कि जनजागरण के जरिए लोगों की जिंदगी को भी गहरे रूप में प्रभावित किया है। रामवती कहती हैं, हमारे इलाके के अधिकतर पुरुष काम काज के सिलसिले में बाहर ही रहते हैं। महिलाएं यहां रहकर अपना घरबार चलाती हैं और बच्चों की परवरिश करती हैं। अधिकतर परिवारों के पास अपनी कोई जमीन नहीं। उन्हें न तो सरकारी योजनाओं के बारे में पता है न काम पाने के अपने अधिकारों के बारे में। परमार्थ की ट्रेनिंग ने उन्हें न केवल मनरेगा जैसी योजना का लाभ हासिल करने के लिए प्रेरित किया बल्कि अपने अधिकारों के बारे में भी जागरूक किया। इसी ट्रेनिंग ने उन्हें सिखाया कि उन्हें अपनी बच्चियों की शादी 18 से पहले नहीं करनी हैं। अब इस क्षेत्र में बाल विवाह का चलन समाप्त हो रहा है।

जल सहेलियों ने बना दी सड़क

अगर कहें कि जल सहेलियों ने बुंदेलखंड के जीवन को बदलने में बहुत बड़ा योगदान किया है तो गलत नहीं होगा। पानी की समस्या हो या जानकारी के अभाव में जिंदगी की दूसरी समस्याएं, सभी क्षेत्रों में जल सहेलियों के दखल ने बदलाव का रास्ता प्रशस्त किया है। दूर दराज के गांव से सड़क संपर्क का अभाव भी ऐसी ही एक बड़ी समस्या है, जो इस इलाके को पिछड़ेपन की ओर धकेलती है। लेकिन सड़क बनाकर भी जल सहेलियों ने गांव की जिंदगी बदल दी। सड़क बनाने की यही कहानी बताते हुए गुड्डी गर्व से भर जाती हैं। जल सहेलियों के श्रम से बनी सड़क ने बच्चों को स्कूल के नजदीक कर दिया। एक सड़क की मरम्मत ने सात-आठ गांवों की मुश्किलें समाप्त कर दी। अपनी समस्याओं के लिए खुद से मेहनत करने का जज्बा रखने वाली ये जल सहेलियां हर तरह के सार्वजनिक कामों में खुद को झोंकने के लिए तैयार रहती है। सामूहिकता का ये बोध ही उनके जीवन की सफलता का मूल मंत्र है।

उम्मीद नहीं थी, इतना कुछ बदल जाएगा

तालबेहट की श्रीकुंवर को पहले यकीन ही नहीं था कि परमार्थ के लोगों की प्रेरणा से उनकी ओर उनके इलाके की जिंदगी बदल जाएगी। वे बहुत ही साफगोई से स्वीकार करती हैं कि पहले उन्हें लगा कि ये लोग केवल अपने फायदे के लिए उनका इस्तेमाल करना चाहते हैं। उनकी जिंदगी तो पानी के लिए संघर्ष करते बीती है और आगे भी उनकी किस्मत में यही संघर्ष लिखा है। लेकिन जब परमार्थ के लोगों ने कोशिशें नहीं छोड़ी तो वह उनके साथ काम करने को तैयार हुई। उन्होंने परमार्थ के साथ मिलकर अपने गांव के लिए चैकडैम बनाने का प्रस्ताव किया। प्रस्ताव तैयार करने के बाद मंजूर कराना और उसके लिए श्रम करने को गांव की महिलाओं को तैयार करना भी आसान नहीं था। लेकिन जब चैकडैम बनाने का प्रस्ताव पास हो गया और उसके लिए सामान भी आ गया तो उनके लिए लोगों को तैयार करना मुश्किल नहीं था। सबने मिलकर अपने इलाके में चैकडैम तैयार कर लिया। इस चैकडैम ने कम से कम सौ परिवारों की जिंदगी बदल दी। उनके पशुओं के पानी और खेतों की सिंचाई की व्यवस्था ने उन सबके जीवन में बहुत बड़ा बदलाव किया है।

मिला सम्मान, बदल गई जिंदगी

श्रीकुंअर कहती हैं ये ऐसा काम था जिसने न केवल हमारी जिंदगी आसान बना दी बल्कि हमें सामाजिक सम्मान भी दिया। मैं पढ़ी लिखी तो थी नहीं। किसी से बात करते हुए संकोच बहुत था। लेकिन परमार्थ ने हमारे भीतर एक नए तरह के आत्मविश्वास पैदा किया। अब हम मिलजुल कर काम करने की ताकत का मतलब जानते हैं। अपने गांव का चैकडेम बनाने के बाद हमने पड़ोस के गांव के लिए भी ऐसा प्रस्ताव पास कराने में मदद की। लोगों को उस काम के लिए जोड़ा। उन्हें भी इस तरह की कोशिशों का फायदा हुआ है। उनके गाव में भी पानी की समस्या का समाधान हुआ। अब इलाके में हमारी पूछ और हमारा सम्मान है। परमार्थ ने तो हमारी जिंदगी ही बदल दी। हम गांव की महिलाएं अब ऐसा सोचती हैं कि परमार्थ ने किस तरह हम सबकी जिंदगी में एक नया आत्मविश्वास पैदा किया है। अब तो हम सभी बहनों को इसी तरह से मिलजुल कर अपनी जिंदगी को बदलने की प्रेरणा देते हैं।

दिल्ली-लखनऊ तो कभी ख्वाब भी नहीं था

सोना को इस बात का बहुत गर्व है कि जल सहेली के रूप में काम करते हुए उन्हें लखनऊ और दिल्ली में जाकर अपनी उपलब्धियां बताने का मौका मिलता है। तालबेहट के बेहद पिछड़े इलाके में रहते हुए कभी सोचा ही नहीं था कि यहां पानी को लेकर स्थिति में कोई बदलाव आएगा। पानी की कमी से इंसान तो जूझ ही रहे थे, जानवरों के लिए पानी की बड़ी समस्या थी। पानी के बगैर जानवरों का जीवन दूभर था। गर्मियों में उन्हें पानी के लिए कोसो भटकना होता था..कई बार तो इसके बावजूद उन्हें पानी नहीं मिलता। लेकिन चैकडैम योजनाओं पर काम करके उन्होंने अपने गांव के लोगों की जिंदगी बदल दी। सूखे पड़े हैंड पंपों को दुरुस्त कराने के लिए तहसील कार्यलय की भागदौड़ हो या किसी सरकारी योजना का लाभ उठाने का सवाल, अब वे गांव की महिलाओं के साथ मिलकर ये जिम्मेदारी खुद उठाती हैं। गांव में महिलाओं बच्चियों में अब आत्मविश्वास है कि वे अपनी समस्याओं के समाधान के लिए खुद ही सक्षम है। परमार्थ के संपर्क में आने से पहले यह सोच नहीं थी। सोना कहती हैं परमार्थ नहीं, ये तो महिलाओं की जिंदगी में बदलाव लाने वाला चमत्कार है।

परमार्थ से जुड़ना एक सपने के पूरा होने जैसा

झांसी जिले के बबीना ब्लॉक के गांव सिमरावाड़ी की मीरा उन जल सहेलियों में शामिल हैं जिन्होंने अपने इलाके की समस्याओं के लिए सबसे अधिक संघर्ष किया है। वे पंचायत चुनाव में हिस्सा लेकर अपने गांव की सेवा के लिए प्रयासरत हैं। बुंदेलखंड के आम गांव की तरह उनके गांव में भी पानी की समस्या विकट थी। मीरा और उसके गांव के अधिकतर लोग इस समस्या को अपने जीवन के सच के रूप में स्वीकार कर चुके थे। लेकिन करीब तीन साल पहले किसी काम से वह बबीना गई थीं। वहां उन्होंने एक जगह कुछ लोगों को कोई बैठक करते देखा। वहां और भी लोग खड़े थे। भीड़भाड़ की वजह से उनका ध्यान उनकी ओर गया और तब पता चला कि इलाके में पानी की समस्या के समाधान के लिए परमार्थ समाजसेवी संस्था के लोग कुछ प्लान कर रहे हैं। मीरा की उत्सुकता बढ़ी और वे खुद ही पहल करके संस्था के साथ जुड़ गईं। मीरा ने अपने इलाके में जल समस्या के समाधान के लिए परमार्थ के साथ कोशिशें तेज की और उसका सकारात्मक नतीजा निकला। उन्हें यह काम करते हुए गर्व का भी अहसास हुआ।

ये ट्रेनिंग नहीं जीवन जीने की कला है

परमार्थ को लेकर मीरा के अनुभव काफी विस्तृत हैं। उन्होंने परमार्थ के साथ ट्रेनिंग की है। मीरा कहती हैं, परमार्थ की ट्रेनिंग ने हमारे भीतर आत्मविश्वास पैदा किया और हमें अपने अधिकारों के बारे में पता चला। हमें पता ही नहीं था, कि यदि हमारे गांव का हैंड पंप खराब है या उससे पानी नहीं आ रहा है तो हमें कहां जाना चाहिए। लेकिन हमारी ट्रेनिंग ऐसी हुई कि हमने अपने अधिकारों के बारे में जान लिया है। हमें पता ही नहीं था कि इन सब काम के लिए गांव के प्रधान के पास बजट होता है। करीब 15-16 हजार लोगों का ये गांव गिनती के हैंड पंपों पर निर्भर था। पानी के लिए सभी को संघर्ष करना पड़ता था। हम जल सहेलियों ने मिलकर प्रयास तेज किए और आज हमारे गांव में पर्याप्त संख्या में हैंडपंप लगे हैं। उनमें किसी तरह की दिक्कत आने पर हम उसके लिए सामूहिक प्रयास करते हैं और उसका समाधान मिल जाता है। जागरुक महिलाओं का जत्था अब बच्चों की परवरिश का सवाल हो या उनकी पढ़ाई लिखाई का सवाल, सभी के बारे में उचित फैसला करने का हौसला रखता है। पानी के उचित इस्तेमाल को लेकर हम लोगों के बीच जागरुकता बढ़ाते हैं। हमारी कई समस्याएं तो इसलिए बड़ी थी क्योंकि हमें उनसे निजात पाने के बारे में ही पता ही नहीं था।

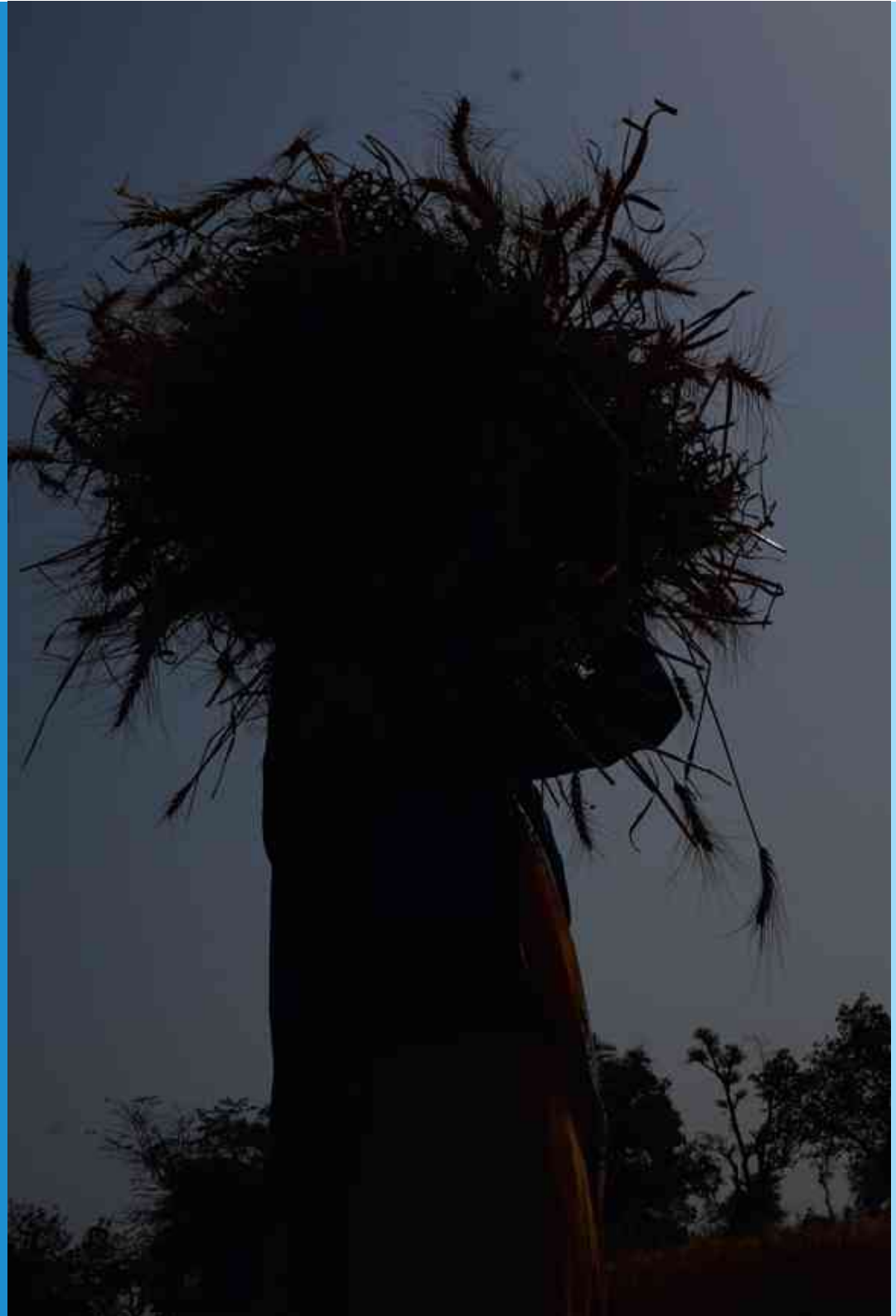

पानी : किल्लत से प्रबंधन तक

हमने परमार्थ की ट्रेनिंग में यह जाना कि कैसे पानी की बचत करनी है? कैसे बरसात के पानी का भविष्य के लिए इस्तेमाल करना है? हमने इसको लेकर अपने गांव में काफी चर्चा की। नई पीढ़ी की औरतों के साथ लगातार संवाद करते हैं ताकि वे इस समस्या को समझ सकें और इसके समाधान करने को लेकर वे सोच सकें। जल सहेली के रूप में काम करते हुए हमने यही जाना कि अगर कोई ठान ले तो कुछ भी कर सकता है। पानी की मुश्किल को हमने किस्मत मान लिया था, लेकिन एक कोशिश से हमारी ही नहीं पूरे इलाके की तकदीर और तस्वीर बदल गई। आज हमें पता है कि बरसात के पानी को कुंए तक पहुंचाने के लिए क्या तरकीब लगाई जाए। किचेन में बर्तन धोने के बाद बचे पानी को बाग में पहुंचाकर कैसे सब्जी उगाई जाए। छोटी-छोटी बातें हमारे जीवन को बड़े रूप में प्रभावित करने लगी हैं। ये परमार्थ से मिले हुनर का असर है। जिस तरह हमारी जिंदगी में बदलाव आया है हम चाहते हैं कि आने वाली पीढ़ी इसी तरह के अपनी जिंदगी को खुशहाल बनाए।

सामाजिक विरोध की टीस

मीरा की कहानी यह भी बताती है कि बुंदेलखंड की महिलाओं में बदलाव का ये दौर कई उथल पुथल से गुजरा है। सामाजिक बेड़ियों में जकड़े बुंदेलखंड की महिलाओं का घर से बाहर निकलना ही सबसे बड़ा बदलाव है। पति को खो देने के बाद अकेली महिला के रूप में मीरा का घर से बाहर निकलना भी शक की नजर से देखा गया। उनके बच्चों तक को भरमाने की कोशिश हुई। लेकिन मीरा बदलाव की ओर बढ़ने का ठान चुकी थी। आगे बढ़ने का इरादा कर चुकी थी। मीरा कहती हैं, नई पीढ़ी की महिलाओं को भी ऐसी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन मैंने उनके पतियों को भी संस्था से जोड़कर और उन्हें आगे बढ़ने का रास्ता दिखाकर इस रोड़े को हमेशा हमेशा के लिए समाप्त कर दिया है। आज हमारे साथ 300 से अधिक जल सहेलियां जुड़ी हैं जो हर तरीके से सामाजिक काम के लिए हर वक्त तैयार रहती हैं और सक्षम हैं। वे अपने अधिकारों के लिए बड़े से बड़े अधिकारियों तक पहुंच जाती हैं। मीरा को उम्मीद है कि पंचायत सदस्य के रूप में चुनाव जीत कर वह अपने सामाजिक दायित्वों का दायरा और बड़ा कर पाएंगी।

नई सोच ने बदल दी हमारी जिंदगी

बबीना बलॉक के खजरा बुजुर्ग की मीरा ने जल चेतना के साथ सामाजिक सुरक्षा को लेकर भी ठोस पहल की है। जल सहेली के रूप में काम करते हुए वे अपने गांव को अधिकतम सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने की पहल की। अपने गांव की बुजुर्ग महिलाओं का विधवा पेंशन दिलाने में मदद की। दफ्तरों की भागदौड़ के बारे में सुनकर ही लोग सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने का साहस नहीं कर पाते। लेकिन मीरा उन्हें अपने अधिकारों के बारे में बताती हैं। उसे हासिल करने में उनकी मदद करती हैं। गांव के छोटे बच्चों को स्कूल जाने के लिए भी प्रेरित करती हैं। बच्चों को शिक्षित बनाने के लिए उनकी माताओं को प्रेरित करने का काम हो या उन्हें स्कूल तक ले जाने का काम, मीरा इसे अपने जीने का संकल्प बना चुकी हैं। परमार्थ की ट्रेनिंग ने उन्हें ये हौसला और हिम्मत दिया है। मीरा कहती हैं परमार्थ से जुड़ने से पहले हमारी जिंदगी और सोच कुछ और थी और अब सबकुछ बदल गया है। हमारी सोच में बहुत बड़ा बदलाव आया है और इसी सोच के साथ हम अपने समाज को आगे बढ़ाने की कोशिश में लगे हैं। मीरा और उनके साथ काम करने वाली जल सहेलियां जैविक खाद बनाने का काम भी करती हैं। इससे उन्हें आर्थिक लाभ भी हुआ है।

हम जल सहेलियों ने बुंदेलखंड की पहचान बदल दी

सिमराबाद की मीना को जल सहेली के रूप में आगे बढ़ने में उनके पति और परिवार ने पूरा साथ दिया। मीना कहती हैं कि परमार्थ की ट्रेनिंग ऐसी है कि हम महिलाओं में अपनी ताकत का अहसास आ जाता है। हमें अपने अधिकारों के बारे में पता हो जाता है। यही वह ताकत है जिसके सहारे हम अपनी हर समस्या का समाधान करते चले जाते हैं। परमार्थ से जुड़ने से पहले हम सोच भी नहीं पाते थे कि किसी काम के लिए हम अपने इलाके के प्रधान या तहसील में अफसरों के सामने अपनी समस्या रख पाएंगे। लेकिन अब ये हम जल सहेलियों के लिए छोटा सा काम है। हमने इस संस्था से जुड़कर सामाजिक बदलाव के लिए भी काम किया है। जल से महत्व को समझकर अपना जीवन आसान कर लिया। बुंदेलखंड तो पानी की कमी के लिए जाना जाता है लेकिन अब हम जल सहेलियां इस इलाके की पहचान बन चुकी हैं। महिलाओं की जिंदगी में इस बदलाव लाने के लिए परमार्थ की कोशिशों की जितनी तारीफ की जाए कम है।

काम से पहचान मिली

बंडा की मीरा झा ने जब परमार्थ के साथ काम शुरू तो उसकी हंसी उड़ाई गई। इलाके के लोग कहते कि ये सिर्फ झांसी के चक्कर काटती रहती है, इसके पास और कोई काम नहीं। लेकिन मीरा झा कहती हैं कि इन्होंने लोगों की बातों पर ध्यान देने के बजाय अपने काम पर ध्यान रखा। उन्होंने इलाके की महिलाओं को जल सहेली योजना से जोड़ना शुरू किया। शुरुआत में पांच महिलाएं उनके साथ जुड़ीं। फिर जल्दी ही ये संख्या बढ़कर दस और अब पच्चीस हो चुकी हैं। मीरा सभी के साथ मिलकर अपने इलाके को पानी की समस्या से मुक्ति दिलाने की कोशिश करती रहती हैं। परमार्थ के लोग उनका मार्गदर्शन करते हैं, सहयोग करते हैं। मीरा और उनकी सहेलियों ने मिलकर अपने इलाके में किचेन गार्डन पर तेजी से काम करना शुरू किया है। रसोई में इस्तेमाल के बाद पानी सीधे इनके किचेन गार्डन में पहुंचता है और उससे सब्जियां उपजाई जा रही हैं। महिलाओं में इससे स्वाबलंबन आ रहा है। महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार होने की वजह से उनको सामाजिक सम्मान भी मिलने लगा है। मीरा कहती हैं, हमने काम से अपनी पहचान बनाई है।

पानी के लिए काट दिया पहाड़

पानी के लिए पहाड़ों से भिड़ जाने का पराक्रम बबीता राजपूत और उन जैसी करीब सौ से भी अधिक जल सहेलियों ने दिखाया है। बुंदेलखंड की ये कहानी जीवटता की ऐसी मिसाल है जिसपर उन सभी को गर्व है जो इस योजना से जुड़े हैं। बबीता बताती हैं, परमार्थ के संपर्क में आने के बाद हमें लगने लगा था कि पानी से जूझ रहे हमारे इलाके को जरूर बड़ी राहत मिलेगी। लेकिन हम सब मिलकर इतनी बड़ी उपलब्धि हासिल कर लेंगे इसका अनुमान नहीं था। शुरुआत में हमने अपने गांव में चेकडैम बनाए। उससे पानी की समस्या काफी हद तक कम हुई। गांव वालों के पशुओं के लिए पानी और नहाने धोने के लिए पर्याप्त जल मिल गया। चेकडैम बनाने की वजह से इलाके के जलस्तर में भी सुधार होने लगा। सूखे पड़े हैंडपंपों में पानी आने लगा। हमारे सामूहिक प्रयास से कुछ नए हैंडपंप भी लगवाए गए। परमार्थ का सहयोग और हम जल सहेलियों का साहस रंग दिखाने लगा।

Facilitate Empowering Process

PARMARTH

परमार्थ समाज सेवी संस्थान

प्रधान कार्यालय- आयकर विभाग के सामने में, चुर्खी रोड, उरई, जालौन- 285001

नेटवर्किंग कार्यालय- नजा हॉस्पिटल की दूसरी वाली गली, शिवाजी नगर, झांसी- 284001

Email- parmarthjhansi@gmail.com

Website- www.parmarthindia.com

Phone- 0510-2321051, 05162254910

welt hunger hilfe

german cooperation

@PARMARTHSAMAJSEVISANSTHAN @PARMARTHSAMAJSEVISANSTHAN @PARMARTHSAMAJSEVISANSTHAN @PARMARTHSAMAJSEVISANSTHAN